उपसंहार

:- उपसंहार -:

मैंने हिन्दी के प्रखर समीक्षक और प्रगतिचेता उपन्यासकार डॉ. देवेश ठाकुर के व्यक्तित्व और कृतित्व का विवेचन करने का प्रयास किया है । प्रारंभ में देवेशजी का प्रामाणिक जीवन-परिचय प्रस्तुत किया है । देवेश ठाकुर के जीवन चरित्र और व्यक्तित्व को देखकर कहा जा सकता है, वे प्रगतिशील एवं मानवतावादी लेखक है । देवेशजी का समग्र जीवन आर्थिक कठिनाइयों के विरुध्द संघर्ष करने में बीत गया है । वे अपने जीवन में जातीयता और साम्प्रदायिकता के विरोध में रहे हैं । विवाह तथा संतान को लेकर उन्हें अपने जीवन में पूर्ण रूप से संतोष है । उनका व्यक्तित्व संपन्न तथा आदर्श है । वे स्पष्ट, मुखर तथा हँसमुख है । उनके व्यक्तित्व के अनुशीलन से हमे जीवन के संघर्ष पथ पर ईमानदारी के साथ अथक परिश्रम करने की प्रेरणा मिलती है । देवेशजी की सफलता का रहस्य उनकी ईमानदारी और परिश्रम है । जिन्दगी के विविध मोडों पर संघर्ष के समय उनमें जीजिविषा वृत्ति उन्हें क्रियाशील बनाती रही ।

हिन्दी में देवेशजी जैसे कम लेखक हुए हैं, जिन्होंने समान रूप से समीक्षा और रचना दोनों का इतनी सार्थकता से निर्वाह किया हो और इतनी सफलता और स्वीकृति पायी हो । देवेशजीने उपन्यास कहानी, कविता, एकांकी, निबंध, शोध-ग्रंथ आदि सभी रचनाओं में संघर्षवादी तथा आस्थावादी स्वर ध्वनित किया है । अपने जीवन की वास्तविकता तथा अनुभूतियों को अपने साहित्य में चित्रित करने में वे सफल हुए है । इस प्रकार उनका मानवतावादी व्यक्तित्व तथा दृष्टिसंपन्न कृतित्व निश्चित रूप से युवकों तथा युवा रचनाधर्मियों के लिए प्रेरणादायी रहेगा ।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत कथावस्तु का स्वरूप देकर"अपना-अपना आकाश" उपन्यास की कथावस्तु का विवेचन करते हुए कथावस्तु की समीक्षा

तथा शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डाला है ।

देवेशजीने उच्चवर्गीय परिवार का वर्णन करते हुए उस परिवार के सदस्यों की मानसिक पर्तों को खोला है । इसमें लेखकने मध्यवर्ग का भी चित्रण किया है । देवेशजीने पात्रों के माध्यम से कथावस्तु को रोचक बनाया है । उपन्यास का प्रमुख पुरुष पात्र प्रकाश अपनी कुण्ठाग्रस्तता के कारण समाज से बदला लेना चाहता है क्यों कि, समाज ने उसकी माँ के साथ अन्याय अत्याचार किये हैं । प्रकाश का प्रतिशोध लेखकने अत्यंत यथार्थ रूप में चित्रित किया है । लेखक के मतानुसार यह प्रिया की कहानी है, जिसमें लेखकने बडे परिवारों के बीच उत्पन्न प्रतिक्रिया का ताना-बाना बुनकर उपन्यास को सफल बनाया है ।

उपन्यास का शीर्षक "अपना-अपना आकाश" आकर्षक तथा सार्थक बन पडा है । शीर्षक संक्षिप्त है मगर उसका बहुत बडा अर्थ निकलता है । जिसमें तीन शब्दों में ही सभी वर्ग और परिवेश का चित्रण यथार्थ रूप में किया है । "अपना-अपना आकाश" उपन्यास की कथा का केन्द्र बम्बई महानगर है और महानगरीय वातावरण में निम्न-मध्य तथा उच्च वर्ग इसका केन्द्रबिंदू है । इस उपन्यास के शीर्षक के सभी वर्गों का तथा उसके परिवेश और मनोवृत्तियों का चित्रण मिलता है । "अपना-अपना आकाश" यह शीर्षक इसीलिए उचित लगता है कि, इसमें सभी वर्गों का चित्रण वास्तविक तथा यथार्थ रूप में मिलता है । इस प्रकार "अपना-अपना आकाश" आज के दिन प्रणय प्रसंगों की पृष्ठभूमि में भी वर्गीय भाव गंभीर भूमिका निभाता है । परिवेश और संस्कारों की नयी व्याख्या करनेवाला यह सफल उपन्यास है ।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत चरित्र-चित्रण की विशेषताओं एवं चरित्र-चित्रण की प्रणालियों को प्रकट करते हुए प्रस्तुत अपन्यास के प्रमुख पात्रों की

विशेषताओं पर प्रकाश डाला है । इसमें प्रमुख रूप से प्रिया प्रकाश तथा प्रो. चन्द्रहास आदि पात्रों का विस्तृत विवेचन किया है ।

देवेशाजीने उपन्यास के प्रमुख दो पुरुष पात्र प्रकाश तथा प्रो. चन्द्रहास और प्रमुख स्त्री पात्र प्रिया का चित्रण अपने-अपने वर्गगत संस्कार में डालकर किया है । "अपना-अपना आकाश" उपन्यास की नायिका तथा प्रमुख स्त्री पात्र है । प्रिया जो उच्चवर्ग में पली-बडी लडकियों का प्रतिनिधित्व करती है । उच्चवर्ग माँ-बाप का सन्तान के प्रति ध्यान न देना तथा उससे उत्पन्न सन्तान में अकेलेपन की भावना को चित्रित करना लेखक का उद्देश्य रहा है । प्रिया हँसीन है, उसका सौंदर्य सभी को मोहनवाला है । उसे माँ-बाप का प्यार कम मिला परन्तु उसमें सुसंस्कृतता भरी हुअी है । वह एक आदर्श छात्रा के साथ-साथ एक आदर्श गायिका तथा कलाकार है । उसका स्वभाव मिलनसार होने के कारण पाठक की सहानुभूति वह जल्दी ही प्राप्त कर लेती है । वह एक आदर्श प्रेमिका भी है ।

उपन्यास का प्रमुख पुरुष पात्र प्रकाश निम्नवर्ग का प्रतिनिधी पात्र है । बम्बई जैसे महानगर में आर्थिक विपन्नता के कारण लोग कुमार्गों की ओर किसतरह आकर्षित होते है इसका चित्रण लेखक ने प्रकाश के माध्यम से चित्रित किया है । संस्कार विहीन प्रकाश में हिनता-बोध दिखाई देती है इसीकारण वह कामुक बन गया है । प्रकाश प्रिया को अपने चुंगल में फँसाकर अपनी उच्च अभिलाषा पूरी करना चाहता है । मगर अंत में उसे प्रिया नहीं मिल पाती । अपनी कुण्ठित मनोवृत्ति के कारण अपने जीवन में आये सुखदायी क्षण को ठुकराकर अपने जीवन को वह त्रासदी में बदल डालता है । और निराशा की खाई में गिरता है । इसीलिए हम उसे असफल नायक कह सकते है ।

प्रो. चन्द्रहास उच्चमध्य वर्ग का पात्र है । प्रो. चन्द्रहास एक संस्कार शील, बुध्दीमान, आदर्श अध्यापक तथा आदर्श प्रेमी के रूप में चित्रित मिलते है । इस प्रकार "अपना-अपना आकाश" उपन्यास के प्रमुख पात्रों का चित्रण अपनी-अपनी जगह सही तरिके से किया है । कथावस्तु को आगे बढ़ाने तथा लेखक का उद्देश सफल करने में इन पात्रों का योगदान महत्वपूर्ण रहा है ।

चतुर्थ अध्याय में निष्कर्षत: कहा है की, "अपना-अपना आकाश" में जो समस्याएँ आयी है उसका विवेचन देवेशजीने विस्तृत रूप में किया है । इसमें आज कल के बढ़ते अनैतिक सम्बन्ध की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है । स्त्री-पुरुष में कामुकता का बढ़ता रूप परिणामस्वरूप स्त्री-पुरुष में अनैतिकता आ रही है । नैतिकता के मानदण्ड ही परिवर्तित हो रहे है । महानगर का जीवन दिन-ब-दिन व्यस्त तथा जटिल बनता जा रहा है । महानगर में बढ़ती आबादी के कारण आवास, यातायात, महँगाई, बेरोजगारी भूख आदि की समस्या निर्माण हो गयी है । महानगरीय व्यस्त जिन्दगी में मध्यवर्गीय तथा उच्चवर्गीय आदमी अकेलापन महसूस करते हैं । यह खालीपन भरने के लिए ये लोग बाहर अपनापा ढूँढते हैं । इसी के कारण परिवार टूटते जा रहे हैं ।

महानगर में बढ़ते रेस्तराँओं में पाश्चात्य संस्कृति ने प्रवेश कर लिया है । वेश्यावृत्ति को बढ़ावा यहाँ से मिलता है । कलाक्षेत्र में भी अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार, अश्लिलता ने प्रवेश कर लिया है । कलाक्षेत्र में शोहरत और पैसा कमाना ही लोग अपना उद्देश्य मान बैठे है । पैसों के बलपर नवधनिक कलाकारों को खरीद रहे हैं । पुलिस वकी नेता सामान्य आदमी का खून चूसते

जा रहे है । समाज के सेवक ही समाज के भक्षक बन गये है ।

लेखकने महानगरीय चित्रण में निम्न, मध्य तथा उच्च वर्ग का चित्रण करके उनकी समस्याओं को चित्रित किया है । आज के समाजसेवक समाज की चिन्ता करने के बदले स्वयं की लोकप्रियता की चिन्ता करते हैं । समाजसेवा का ढोंग रचाकर मान-सन्मान, पैसा कमाते है । समाजसेवा का खोखलापन में लेखकने आज के समाजसेवक पर व्यंग्य करके उनसे निर्माण समस्याओं को हमारे सामने प्रस्तुत किया है । इस प्रकार देवेशजीने "अपना-अपना आकाश" उपन्यास में अनेक समस्याओं का चित्रण किया है, जिसमें वे सफल हो गये है ।

"अपना-अपना आकाश" उपन्यास का कथ्य प्रकाश और प्रिया की प्रेमकहानी के साथ-साथ बड़े परिवार के बीच संतान के प्रति उदासिनता और उसके परिणाम स्वरूप संतान में उत्पन्न प्रतिक्रिया की कहानी प्रस्तुत करता है। प्रिया संस्कारों के कारण ही अपने जीवन में आये सकंटो का सामना तटस्थ रहकर कर पाती है । तथा प्रकाश जैसे निम्नवर्ग के लोग संस्कारविहीन होने के कारण अपने जीवन में असफल रहते है । और उनका जीवन दु:खान्त बन जाता है । हर एक का अपना अपना आकाश होता है, अपना परिवेश होता है और समान परिवेशों के, समान संस्कारों के, समान वर्ग के लोग ही एक दुसरे से जुड सकते है । इन बातों को चित्रित करना उपन्यासकार का उद्देश रहा है और इस उद्देश की सिध्दी में उपन्यासकार देवेश ठाकूर सफल बन गये है ।